Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

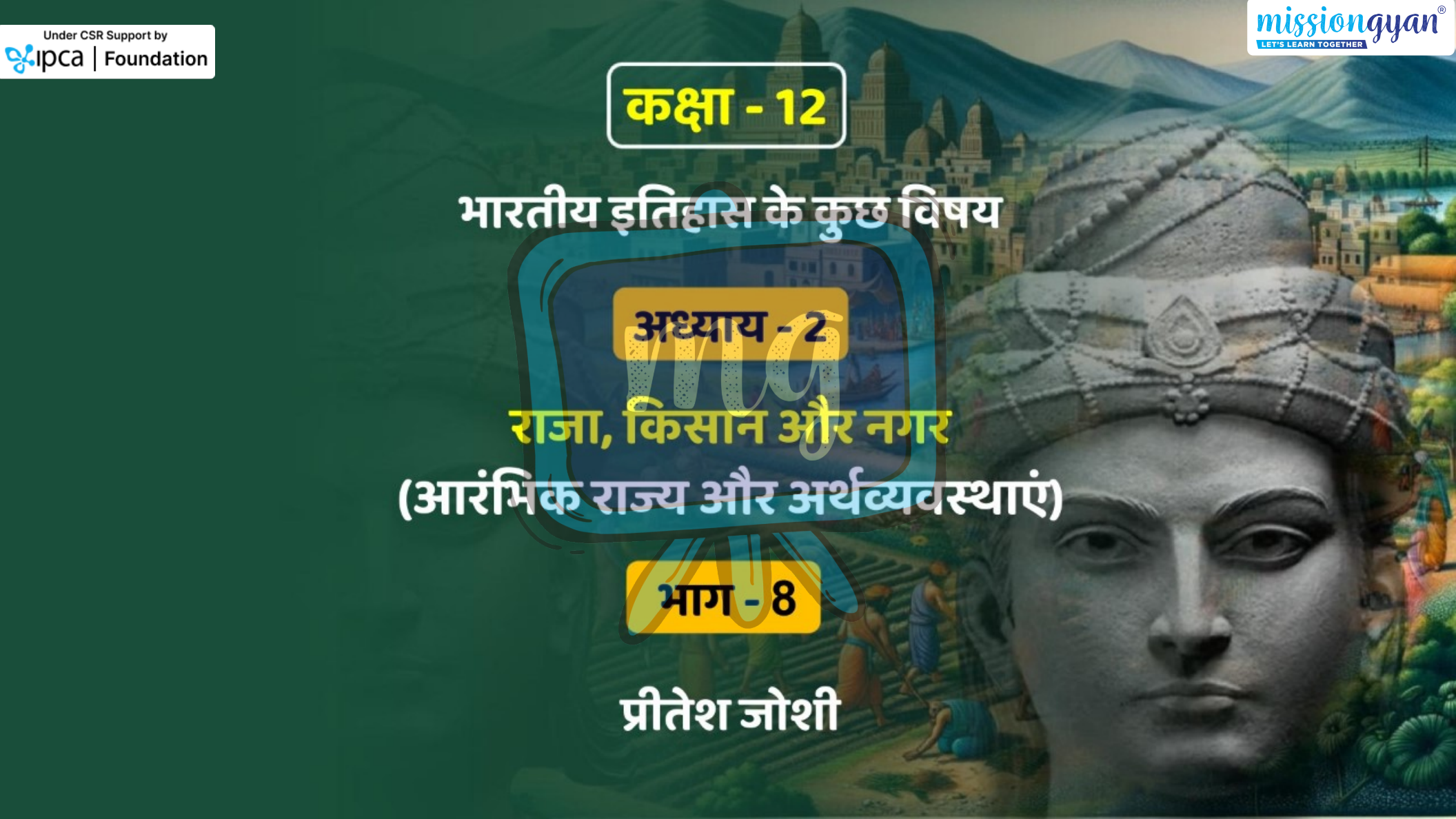

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 2

राजा, किसान और नगर

(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग - 8

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

क्या Gift लाए ?

अभि० → ताम्रपत्र

P.B भूमिदान

- ग्रामीण प्रजा + ब्राह्मण किसान (अन्य वर्ग)
  - शासकों को वस्तु प्रदान



- प्रधान की आज्ञाओं का पालन + कर
- देश के कई हिस्सों में

mg

इस अभिलेख में हमें ग्रामीण प्रजा का पता चलता है इनमें ब्राह्मण किसान तथा अन्य प्रकार के वर्ग शामिल थे। जो शासकों या उनके प्रतिनिधियों को कई प्रकार की वस्तुऐं प्रदान करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- भूमि के माप में भी अंतर
  - छोटे
  - बड़े
- दान प्राप्त के अधिकारों में भी अंतराल

- अभिलेख के अनुसार गांव के लोगों को गांव के नये प्रधान की आज्ञाओं का पालन करना होता था और संभवतः अपने भुगतान उसे ही देने पड़ते थे।
- इस प्रकार के भूमिदान अभिलेख देश के कई हिस्सों से प्राप्त हुए हैं।
- क्षेत्रों में दान में दी गयी भूमि की माप में अंतर है कहीं छोटे टुकड़े तो कहीं बड़े बड़े क्षेत्र दान में दिये गये हैं।
- भूमिदान में दान प्राप्त करने वालों के अधिकारों में भी क्षेत्रीय परिवर्तन मिलते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

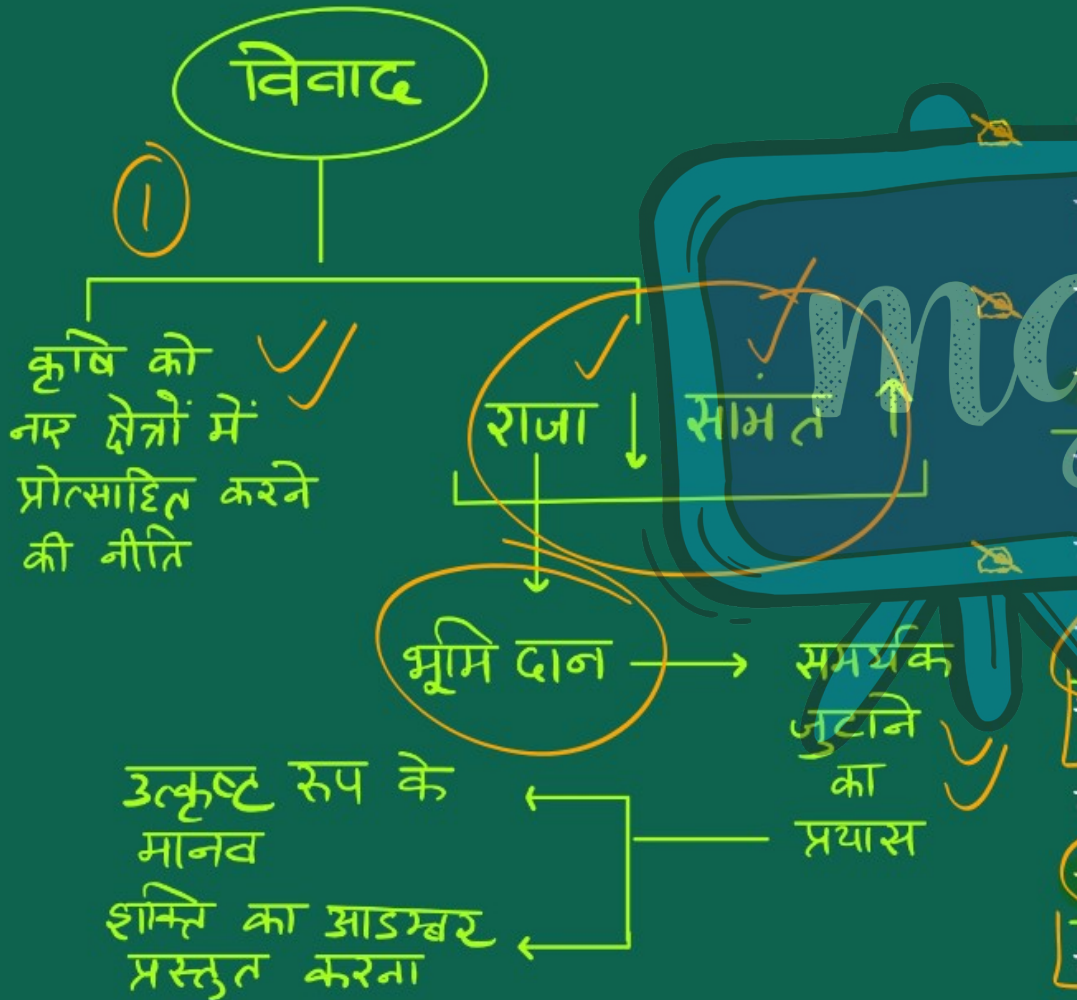

- भूमिदान इतिहासकारों में भी गर्म वाद विवाद का विषय बना हुआ है।
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार भूमिदान शासक वंश द्वारा कृषि को नये क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने की रणनीति थी।
- कुछ अन्य इतिहासकारों का मानना है कि भूमिदान से दुर्बल होते राजनीतिक प्रभुत्व का संकेत मिलता है अर्थात् राजा का शासन सामंतों पर दुर्बल होने लगा तो उन्होंने भूमिदान के माध्यम से अपने समर्थक जुटाने प्रारम्भ कर दिये। राजा स्वयं को उत्कृष्ट स्तर के मानव के रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

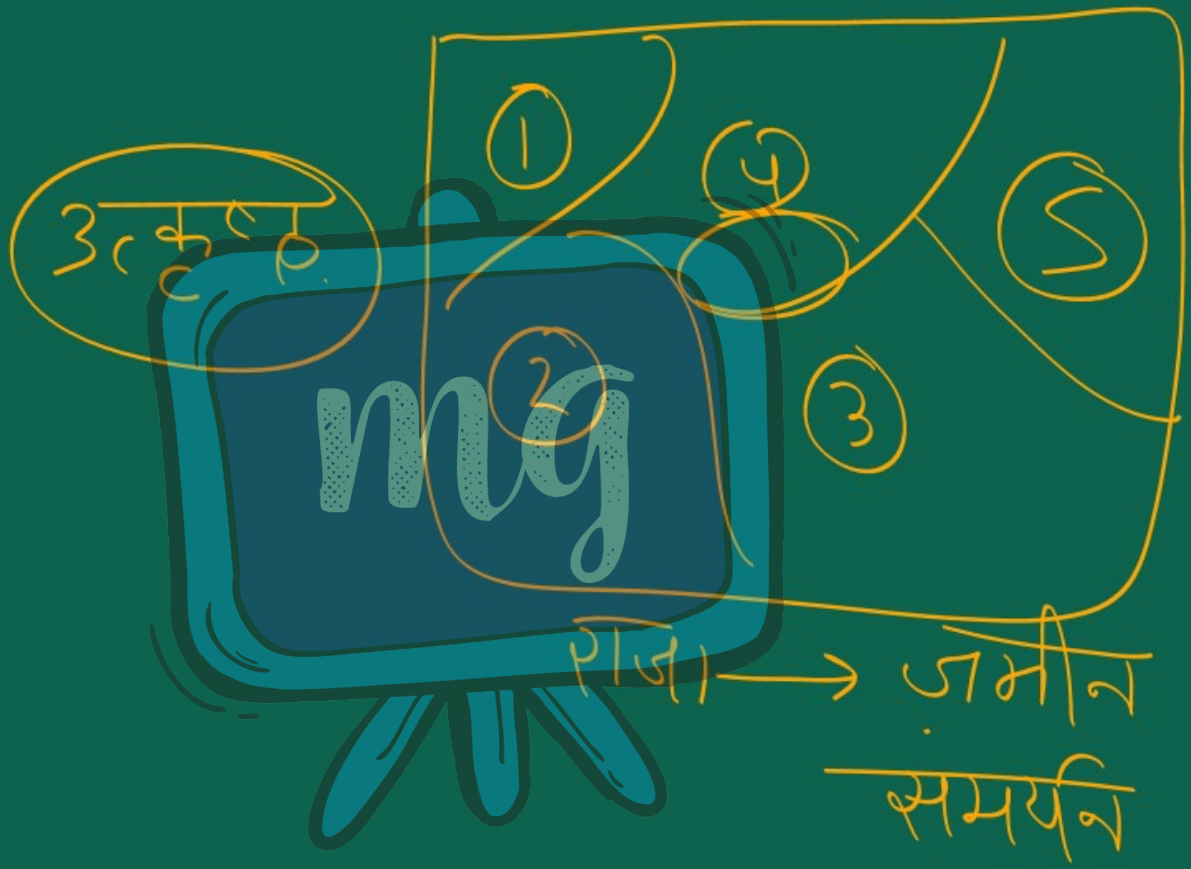

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

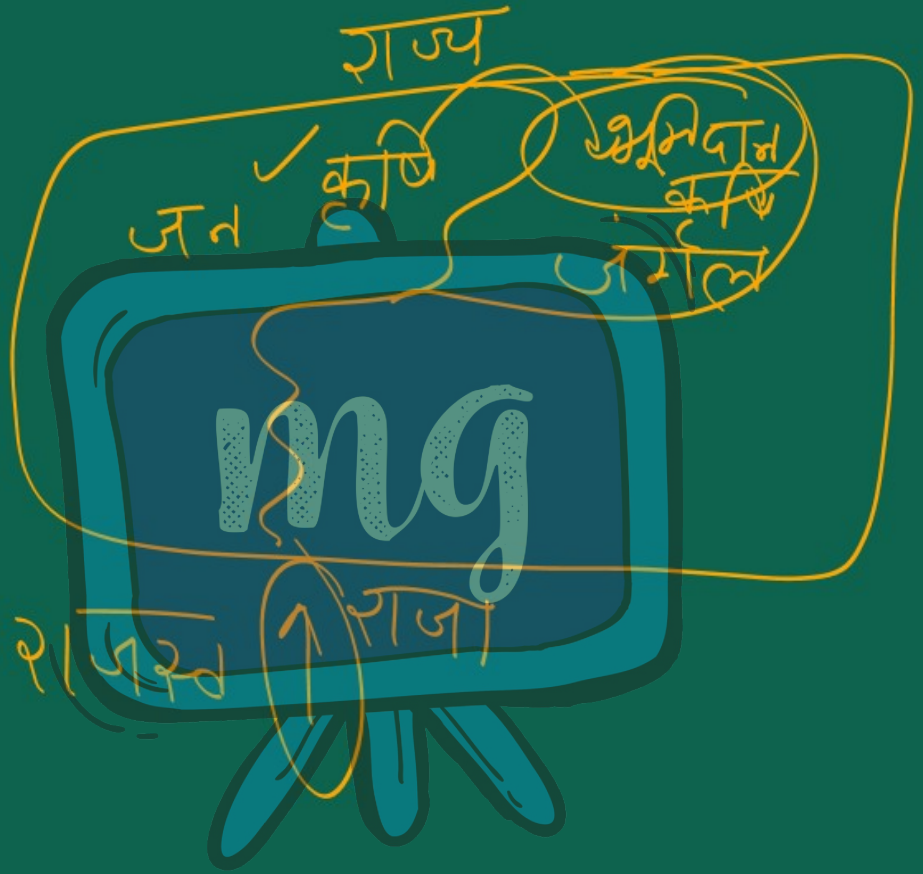

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

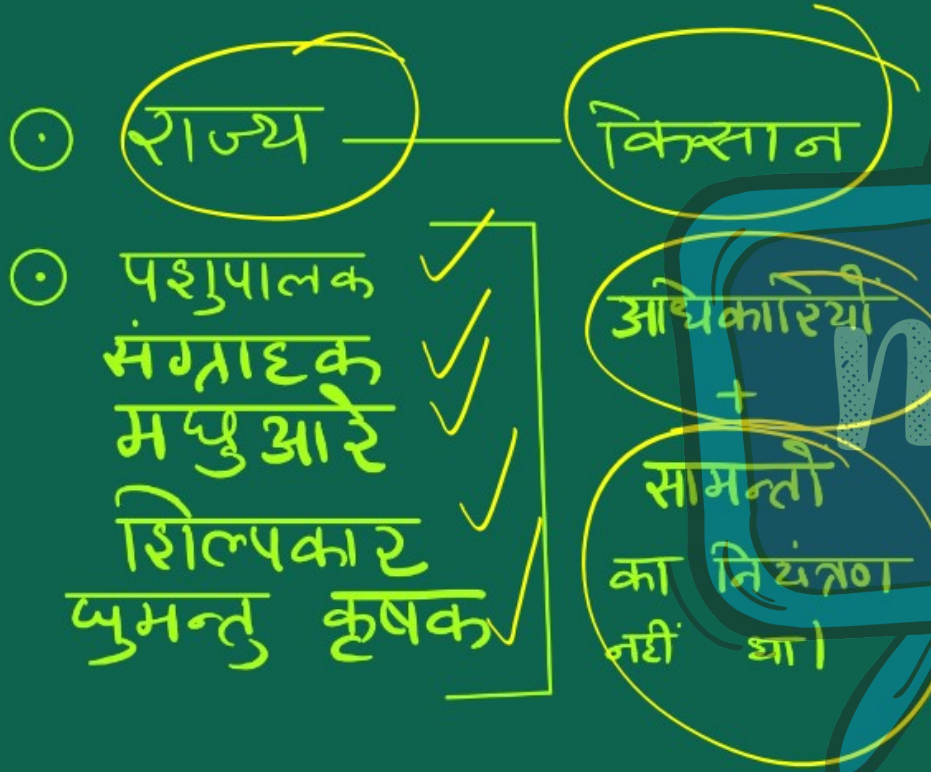

उनका नियंत्रण ढीला होता जा रहा था इसलिए वे अपनी शक्ति का आडम्बर प्रस्तुत करना चाहते थे।

भूमिदान के प्रचलन से राज्य और किसानों के बीच संबंध की झांकी मिलती है।

कुछ ऐसे भी लोग थे जिन पर अधिकारियों या सामंतों का नियंत्रण नहीं था जैसे कि पशुपालक, संग्राहक, शिकारी, मछुआरे, शिल्पकार और जगह जगह घूम कर खेती करने वाले लोग। सामान्यतः ऐसे लोग अपने जीवन और आदान प्रदान के विवरण नहीं रखते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

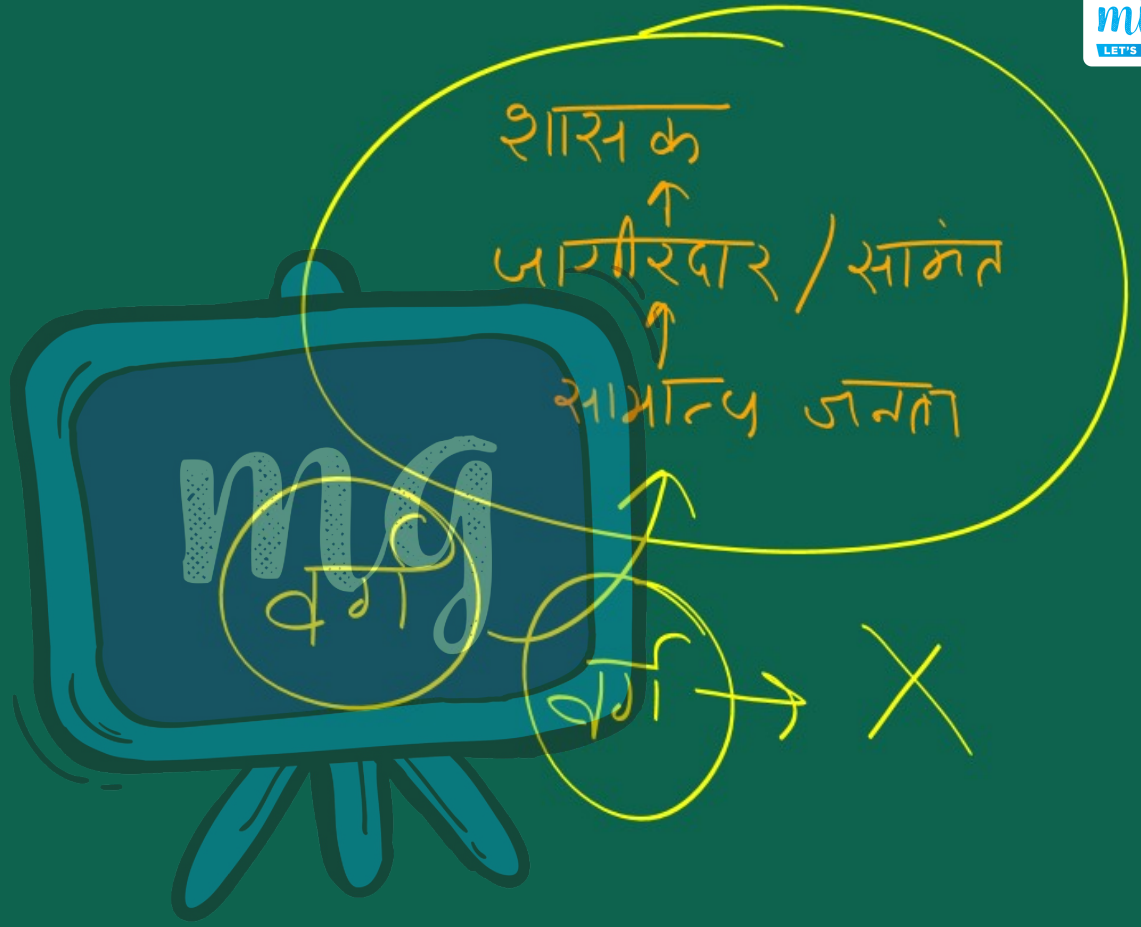

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सामान्य लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण इतिहासकार कैसे करते थे? जातक + पंचतंत्र

Q. वर्णित काल में कृषि के तौर तरीकों में किस हद तक परिवर्तन हुए?

लोहे का फाल

नहर और तालाब

Q भूमि दान से क्या तात्पर्य है?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भूमिदान राजा ?

इतिहासकार



कृषि ↑ राजस्व ↑

ताकत ↓

सामन्त

प्रजा ↓

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

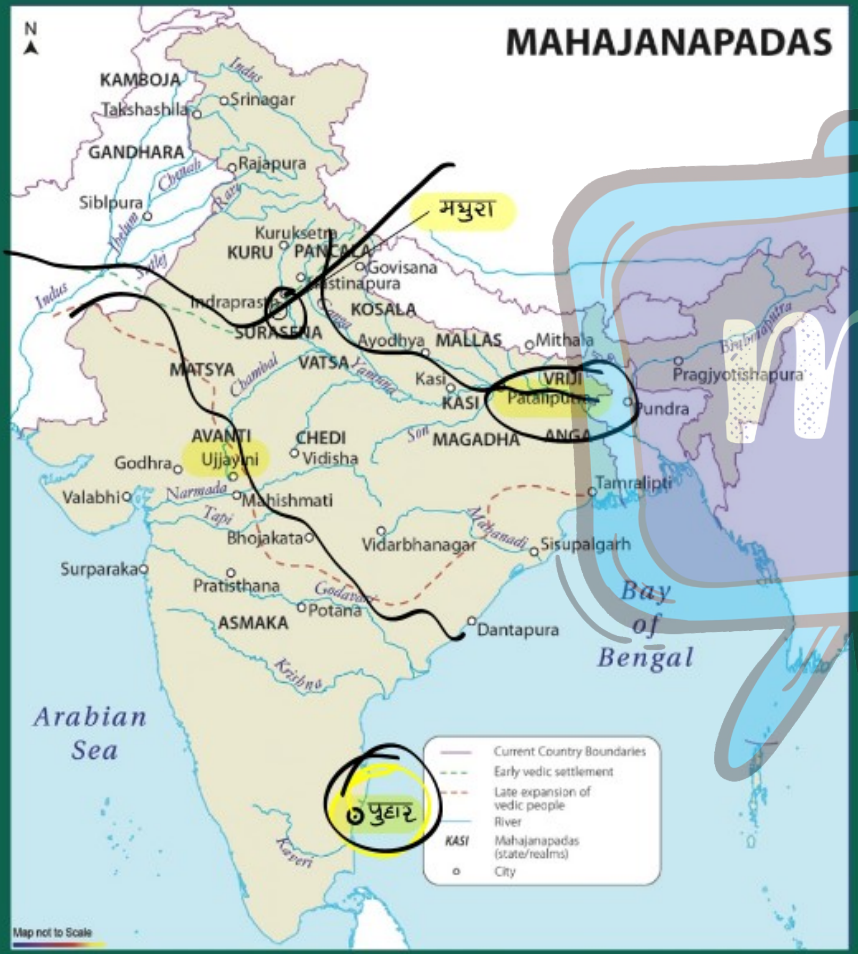

नगर एवं व्यापार

नए नगर :

- छठी शताब्दी ई.पू. में उपमहाद्वीप में कई नये नगरों का विकास हुआ।
- इनमें से अधिकांश नगर महाजनपदों की राजधानियाँ थे।
- प्रायः सभी नगर संचार मार्गों के किनारे बसे थे।
- पाटलिपुत्र जैसे कुछ नगर नदीमार्ग के किनारे बसे थे।
- उज्जयिनी भूतल मार्ग के किनारे बसा था।
- पुहार जैसे नगर समुद्रतट पर थे, जहाँ से समुद्री मार्ग प्रारंभ हुए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



पाटलिपुत्र का इतिहास

प्रत्येक नगर का अपना इतिहास था। उदाहरण के तौर पर, पाटलिपुत्रा का विकास पाटलिग्राम नाम के एक गाँव से हुआ। फिर पाँचवीं सदी ई. पू. में मगध शासकों ने अपनी राजधनी राजगाह से हटाकर इसे बस्ती में लाने का निर्णय किया और इसका नाम बदल दिया।

चौथी शताब्दी ई. पू. तक आते–आते यह मौर्य साम्राज्य की राजधानी और एशिया के सबसे बड़े नगरों में से एक बन गया। बाद में इसका महत्त्व कम हो गया और जब चीनी यात्री ह्वैन त्सांग सातवीं सदी ई. में यहाँ आया तो इसे यह नगर खंडहर में बदला मिला और उस समय यहाँ की जनसंख्या भी कम थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

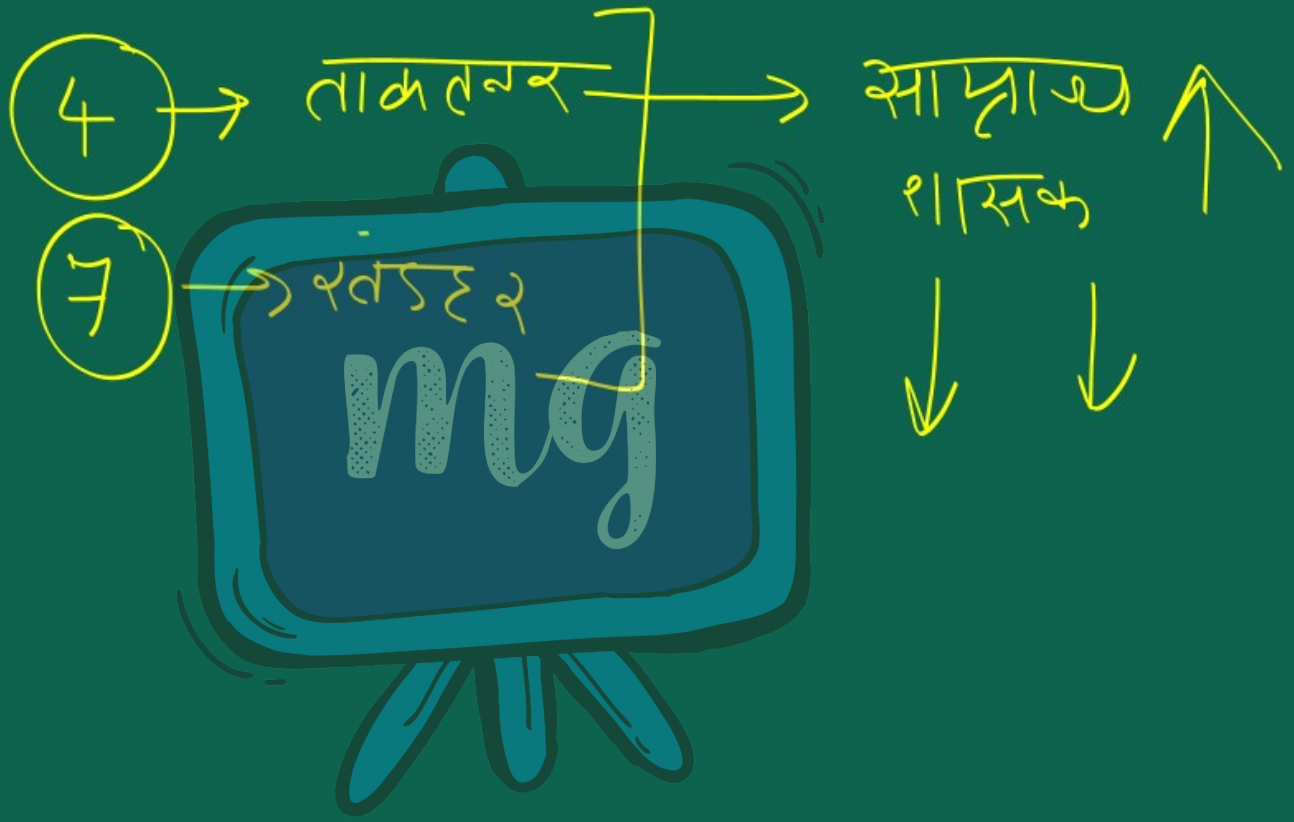

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Q. भूमिदान करने के क्या कारण रहे होंगे?

Q. सम्पन्न वर्ग के दानात्मक अभि० के तौर में हमें क्या पता चलता है?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नगर ?

बिहार → पटना

संभ्रांत वर्ग और शिल्पकार :–

- शासक वर्ग और राजा किलेबंद नगरों में रहते थे। यद्यपि इनमें से अधिकांश स्थलों पर व्यापक रूप से खुदाई करना संभव नहीं है, क्योंकि आज भी इन क्षेत्रों में लोग रहते हैं।
- इसके पश्चात भी पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इनमें उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र कहा जाता है। संभवतः इनका उपयोग अमीर लोग किया करते होंगे।
- इसके साथ ही सोने चाँदी, कांस्य, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे जैसे तरह–तरह के पदार्थों के बने गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

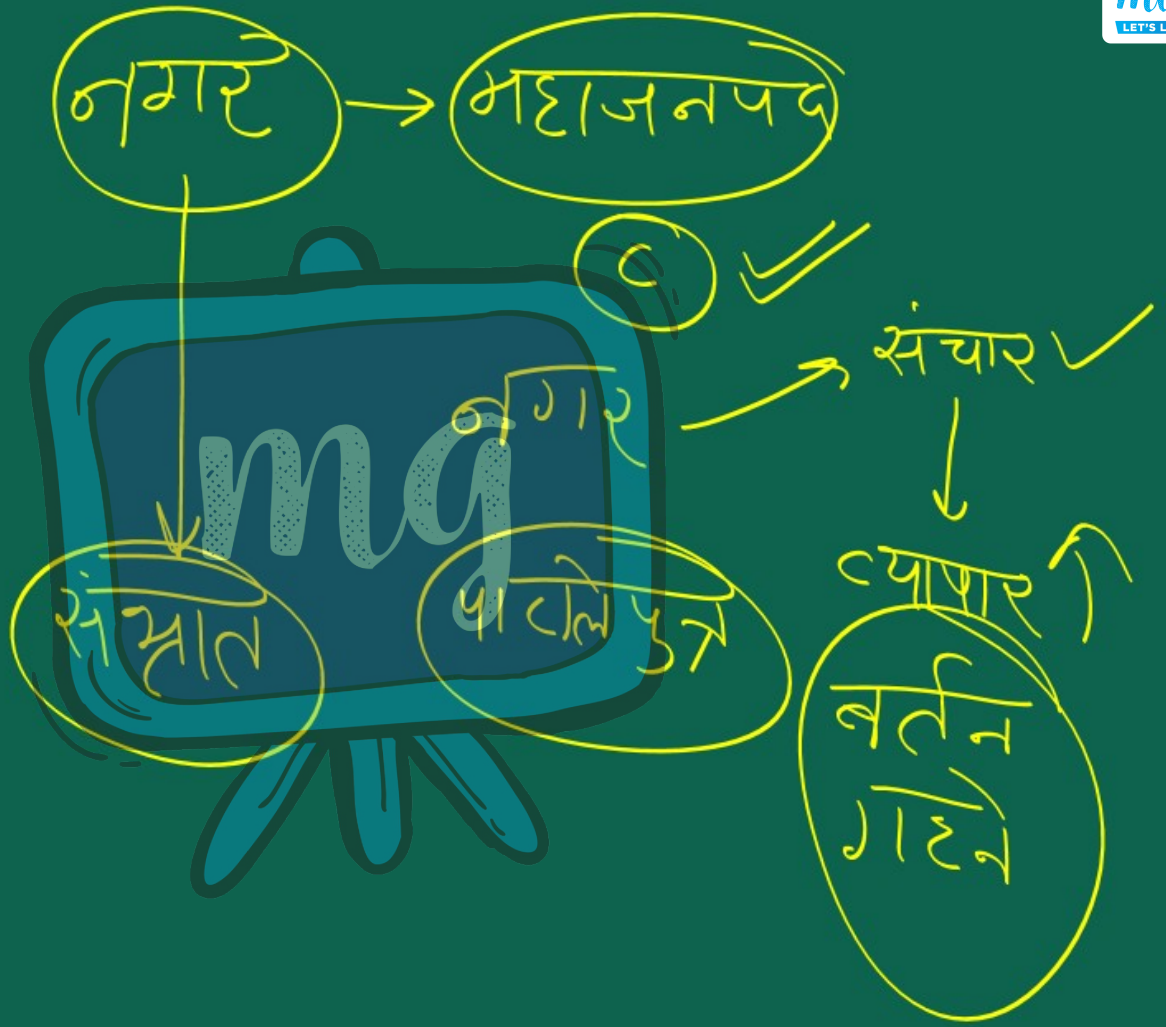

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भूमिदान
↓
PB → शासक
व्यापारी
शिल्पकार
साहूकार

- द्वितीय शताब्दी ई.पू. आते–आते हमें कई नगरों में छोटे दानात्मक अभिलेख प्राप्त होते हैं। इनमें दाता के नाम के साथ–साथ प्रायः उसके व्यवसाय का भी उल्लेख होता है।

धार्मिक मूर्ति
↓
नागदिया

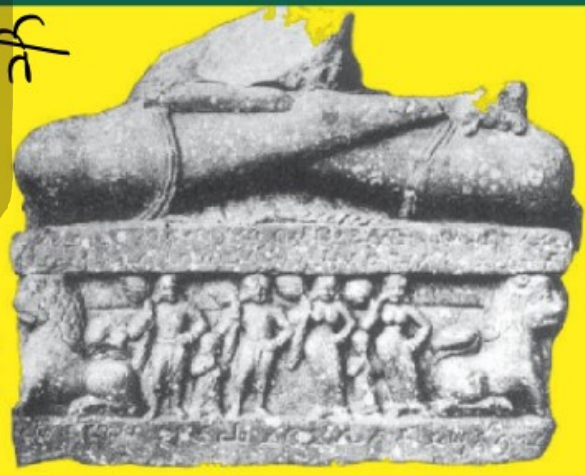

एक प्रतिमा की भेंट
यह मथुरा से मिली एक पूर्ति का भाग है। इस पर प्राकृत में अभिलेख है जिसमें कहा गया है कि एक स्वर्णकार अमक की पत्नी नागदिया ने इसे एक धार्मिक स्थल में स्थापित किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

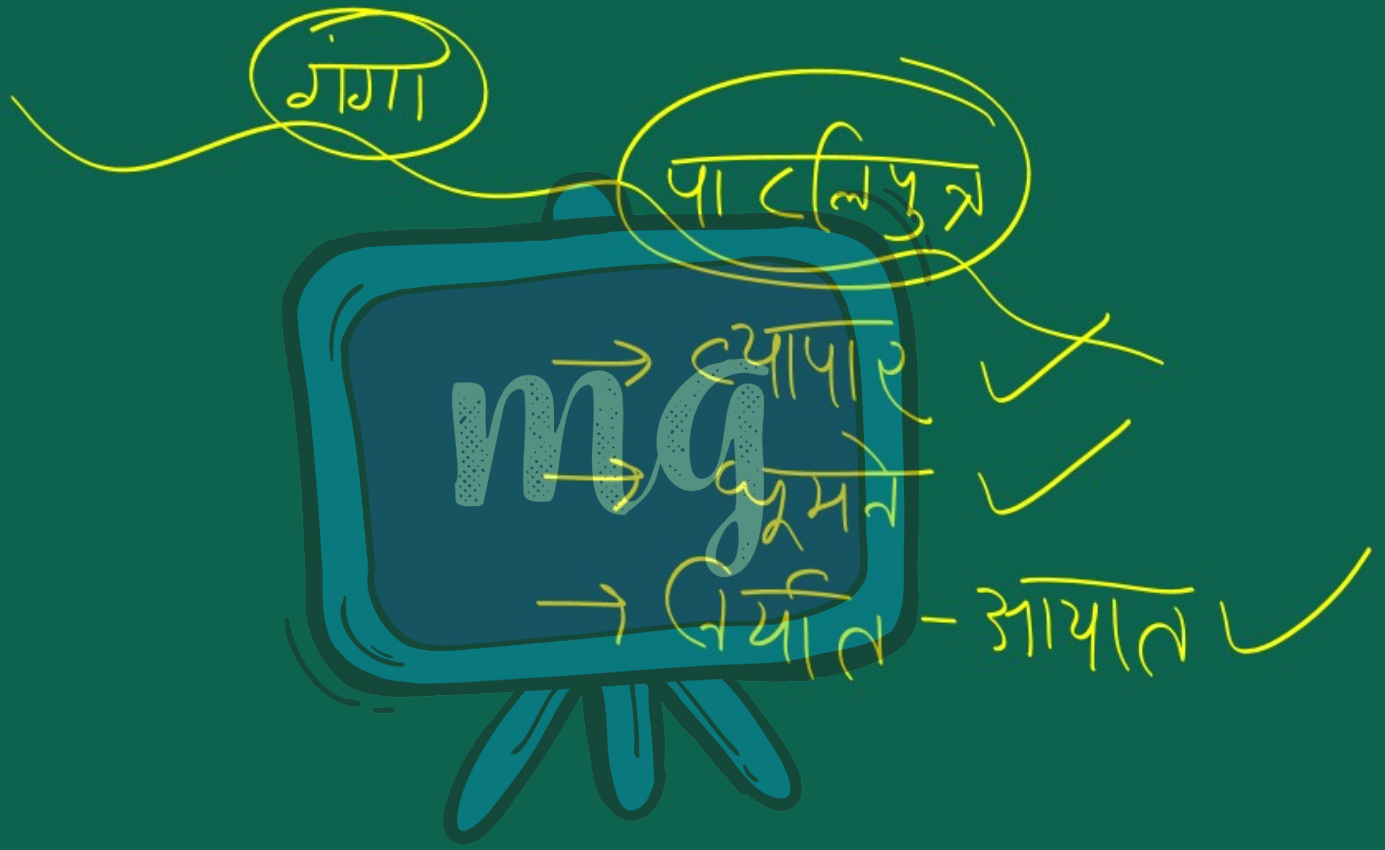

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संभ्रांत वर्ग और शिल्पकार :–

- शासक वर्ग और राजा किलेबंद नगरों में रहते थे। यद्यपि इनमें से अधिकांश स्थलों पर व्यापक रूप से खुदाई करना संभव नहीं है, क्योंकि आज भी इन क्षेत्रों में लोग रहते हैं।
- इसके पश्चात् भी पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इनमें उत्कृष्ट श्रेणी के मिट्टी के कटोरे और थालियाँ मिली हैं जिन पर चमकदार कलई चढ़ी है। इन्हें उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र कहा जाता है। संभवतः इनका उपयोग अमीर लोग किया करते होंगे।
- इसके साथ ही सोने चाँदी, कांस्य, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे जैसे तरह–तरह के पदार्थों के बने गहने, उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

द्वितीय शताब्दी ई.पू. आते–आते हमें कई नगरों में छोटे दानात्मक अभिलेख प्राप्त होते हैं। इनमें दाता के नाम के साथ–साथ प्रायः उसके व्यवसाय का भी उल्लेख होता है।

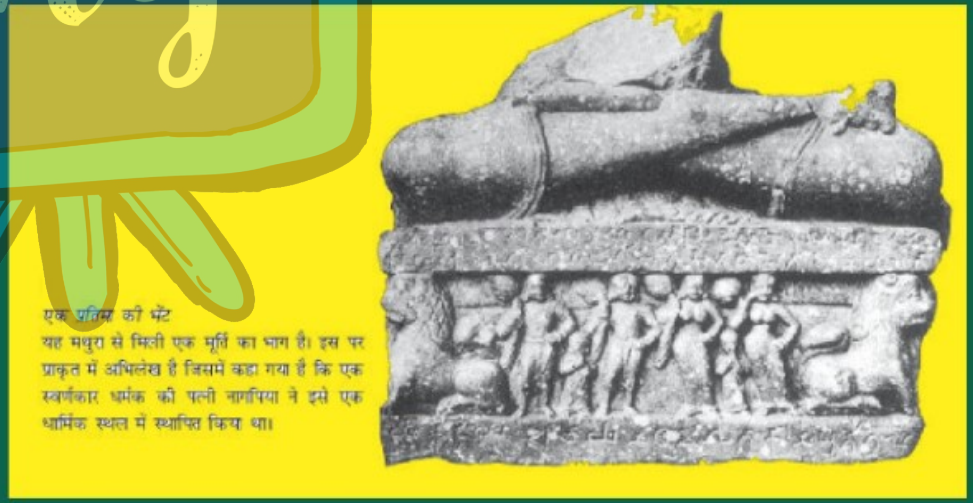

एक प्रतिमा की भेंट
यह मथुरा से मिली एक मूर्ति का भाग है। इस पर प्राकृत में अभिलेख है जिसमें कहा गया है कि एक स्वर्णकार धर्मक की पत्नी नागदिया ने इसे एक धार्मिक स्थल में स्थापित किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

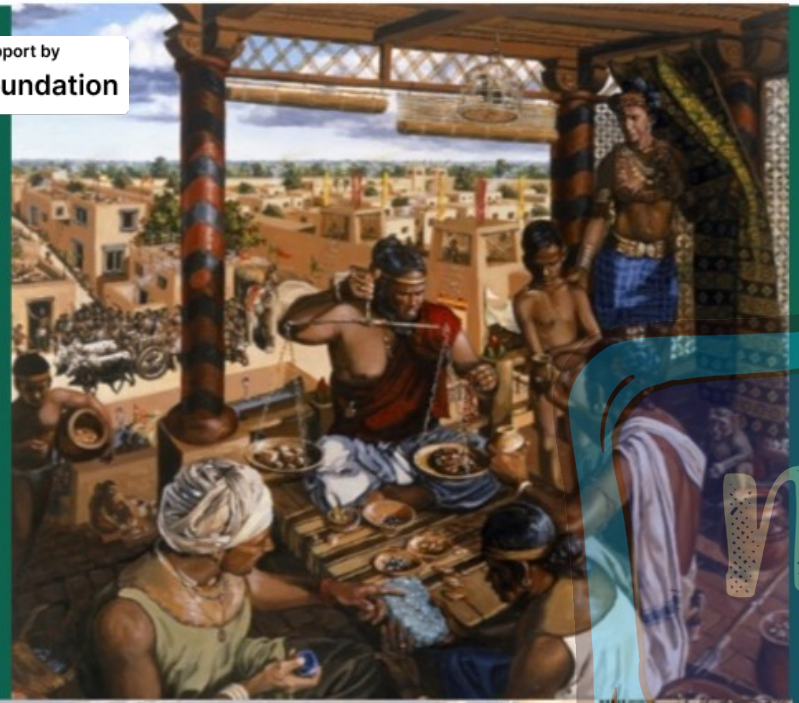



→ सामाजिक // आर्थिक

- इन अभिलेखों में नगरों में रहने वाले धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार, अधिकारी, धार्मिक गुरु, व्यापारी और राजाओं के बारे में विवरण लिखे होते हैं।
- कभी–कभी उत्पादकों और व्यापारियों के संघ का भी उल्लेख मिलता है जिन्हें श्रेणी कहा गया है।
- ये श्रेणियाँ संभवतः पहले कच्चे माल को खरीदती थीं फिर उनसे सामान तैयार कर बाजार में बेच देती थीं।
- यह संभव है कि शिल्पकारों ने नगर में रहने वाले संभ्रात लोगों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए कई प्रकार के लौह उपकरणों का प्रयोग किया हो।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 600 ई पू के नगर और व्यापार के बारे मे एक लेख लिखे ?

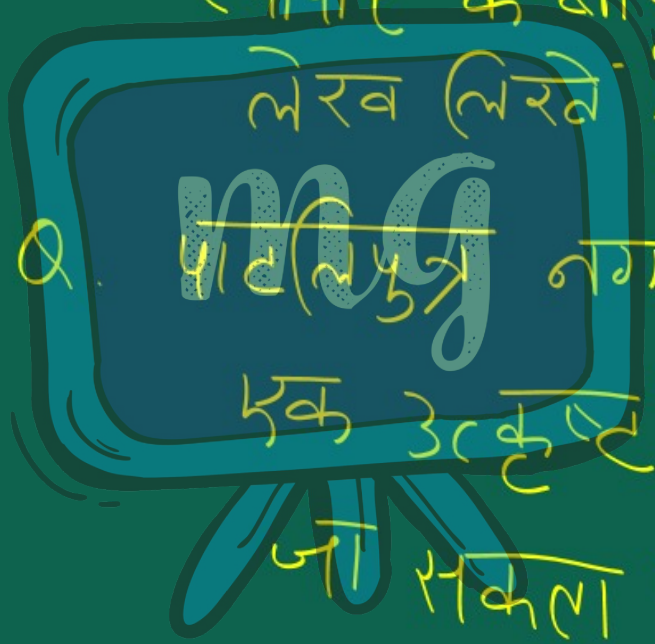

Q. पाटलिपुत्र नगर किस प्रकार एक उत्कृष्ट केन्द्र कहा जा सकता था?